(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. I, Jan-Mar ISSN: 2249-4642

ARYA SAMAJ AND ACTIVE POLITICS

Dr. A. Mukta Vani

Associate Professor, Dept of Sanskrit, Hindi Mahavidyalaya

Hyderabad

आर्यसमाज एवं सक्रिय राजनीति

डॉ. ए. मुक्ता वाणी

असोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

IJRSSH

"आर्यसमाज एवं सक्रिय राजनीति" यह विषय आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बड़ा ही सामयिक है।

आर्य कौन है?

वेद के अनुसार "आर्यव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि ।"

आर्य वह है जो भूमि पर निवास करता हुआ सत्य, अहिंसा, पवित्रता, परोपकारादि व्रतों का पालन करनेवाला है। निरुक्त में यास्क महर्षि ने कहा है- "आर्यः ईश्वर पुत्रः" । पाणिनि मुनि के "अर्थः स्वामिवैश्ययोः" सूत्र के अनुसार- अर्य का अर्थ स्वामी, परमेश्वर और उसका पुत्रवत् अनुगामी आर्य कहलाता है। संस्कृत का प्रथम महाकाव्य रामायण तथा महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में आर्य शब्द का प्रयोग उत्तम गुण विशिष्ट श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए हुआ है। समाज का अर्थ है समूह। प्रभु का आदेश है -

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।" ऋग्वेद अर्थात् हम सब मिलकर कार्य करें। इस मन्त्र का पाठ एवं आचरण दोनों अत्यावश्यक हैं। हम सारे मतभेदों को भूलकर एक साथ कार्य करें तो समाज के निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, और समाज शब्द की सार्थकता भी इसी में है।

सक्रिय राजनीति -

सक्रिय क्रियाशील, राजनीति राजधर्म। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का छटा समुल्लास पूर्णरूप से राजधर्म, (जिसे आज की भाषा में राजनीति कहते हैं), को अर्पित किया है। 'राज' शब्द के साथ नीति न लगाकर, धर्म शब्द का प्रयोग कर ऋषि ने स्पष्ट कर दिया कि राज्य का सब भार और सम्पूर्ण कार्य कोई सामयिक उपयोगिता पर ही आधारित न होकर, आपाततः धर्म में बद्धमूल होना चाहिए ।

महर्षि ने कहा है "जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता है ।"

आज राजनीति का पर्याय भ्रष्टाचार होता जा रहा है, ऐसी परिस्थिति में आर्य समाज को क्रियाशील राजनीति में भाग लेना चाहिए कि नहीं?

इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज का प्रभाव भारत की राजनीति और स्वाधीनता संघर्ष में प्रथम उद्‌गाता के रूप में रहा है। यह वात निःसंकोच कही जा सकती है कि आर्य समाज ने स्वल्प समय में जो सफलता प्राप्त की है, विश्व के इतिहास में संभवतः किसी अन्य संस्था ने इतने अल्पकाल में वह उपलब्धि नहीं प्राप्त की ।

इण्डियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना 1885 में हुई, पर ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज 1875 में ही कार्यक्षेत्र में आ गया था। काँग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की माँग 1929 के अन्त में लाहौर अधिवेशन में की। भारत के राजनीतिज्ञ जिस लक्ष्य को 20वीं सदी में निश्चय कर सके उसे महर्षि इस काल से लगभग एक सदी पूर्व प्रेरणा दे चुके थे। ऋषि की बुद्धि का अद्‌भुत चमत्कार है कि उन्होंने विशुद्ध धार्मिक संगठन की नींव प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों पर रखी। आर्य समाज का संगठन विश्व की अन्य धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं के लिए शिक्षाप्रद तथा नवमार्ग प्रदर्शक भी है। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में क्रान्ति की व्यापक अग्नि प्रज्वलित करना चाहता है।

उपनिषद् में कहा गया है - "तपसा चीयते ब्रह्म" तप एक ऐसी पवित्र अग्नि है, जिसमें से निकलकर मानव की आत्मा निखर जाती है। आर्य समाज को भी विश्व में देदीप्यमान होने के लिए अनेक अग्नि परीक्षाओं का मुकाबला करना पड़ा।

IJRSSH

आर्यसमाज ने राजनीतिक क्षेत्र के अन्तर्गत आनेवाले सभी कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लिया है। उस समय सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने का अर्थ वोट या मत प्राप्त कर एम.एल.ए. या एम्.पी. बनना आर्यों का लक्ष्य नहीं था। वे पदों की चिन्ता न कर देशोद्धार में जुटे थे ।

आर्यसमाज का स्थापना दिवस से लेकर आज तक राजनीति के साथ अविभाज्य सम्बन्ध रहा है, यदि आर्य समाज से राजनीति पृथक् होती तो महर्षि को छठा समुल्लास लिखने की आवश्यकता ही नहीं थी । वे तो विश्व में आर्यों का अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य चाहते थे, किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत की राजनीति में उथल पुथल बढ़ती गयी, अनेक पार्टियों ने जन्म लिया, पर आर्य समाज की रुचि देश की राजनीति से विमुख होती गयी । आर्य नेताओं को चाहिए था कि स्वतन्त्रता के पश्चात् 'आर्यदल' की स्थापना कर कार्य करते तो राजनीतिक क्षेत्र में हमारी स्थिति अत्युन्नत होती ।

खेद का विषय है कि आज का जनमानस पदों की ओर आकृष्ट है। हमने राम एवं भरत के त्याग को विस्मृत कर दिया, जिन्होंने सिंहासन को ही ठोकर मार दी ।

राजतिलक की गेंद बनाकर, खलन लगे खिलाड़ी ।

इधर राम उधर भरत, दोनों ने ठोकर मारी ।।

भीष्म पितामह कहते हैं -

सतयुग में न राजा था, न राज्य

न दण्ड था, न दण्ड देने वाला ।

सब लोग धर्म से ही परस्पर सहायता करते हुए सुरक्षित थे ।।

आज ऐसे ही धर्मराज्य की आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति करने में आर्य समाज सक्षम है। ऋषिवर लिखते हैं -

"जो मनुष्य कह दे कि मैं वेदों को मानता हूँ, और आर्य हूँ, उसे आर्य समाज में सम्मिलित कर लो। तुच्छ भेदों और विरोधों को त्याग कर, मेल जोल की बातों में मिलाप सम्पादन करो ।"

ऋषि के इस सन्देश का हमें पालन करना चाहिए ।

IJRSSH

इस प्रकार इस लेख का सारांश यही है कि आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए, किन्तु अपने सिद्धान्तों का हनन करके नहीं । हमें सर्वप्रथम नैतिक कर्तव्यों का पालन करना होगा, तभी हम सफल हो सकेंगे।

IJRSSH